

Sarvajanik Karyakram

Date : 22nd March 1993
Place : Delhi
Type : Public Program
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

सहजयोग का ज्ञान सूक्ष्मज्ञान है और सूक्ष्मज्ञान को प्राप्त करने के लिये, हमें भी सूक्ष्म होना है। ये सूक्ष्मता क्या है कि हमें आत्मा स्वरूप होना चाहिये। आत्मा से ही हम इस सूक्ष्म ज्ञान को समझ सकते हैं। क्योंकि आत्मा का अपना प्रकाश है और वो प्रकाश जब हमारे ऊपर प्रगटित होता है तो उस आत्मा के प्रकाश में ही हम इस सूक्ष्मज्ञान को जानते हैं। ये हमारे ही अन्दर की आत्मा है। ये परमात्मा का प्रतिबिम्ब हमारे ही अन्दर आत्मा स्वरूप है और कुण्डलिनी परमात्मा की इच्छा शक्ति आदि शक्ति का प्रतिबिम्ब है। कुण्डलिनी साढ़े तीन वलयों में है जिन्हें कुण्डल कहते हैं इसलिये उसका नाम कुण्डलिनी है। कुण्डलिनी जब उठती है तो ये साढ़े तीन कुण्डल पूरे के पूरे नहीं उठते। जैसे कि रस्सी में बहुत से धागे बंधे रहते हैं उसी प्रकार इस कुण्डलिनी में भी बहुत से धागे हैं। उनमें से कुछ धागे ऊपर उठते हैं और आपके तालू, संस्कृत में तालव्यय, का छेदन करती हुई ये कुण्डलिनी सूक्ष्म शक्ति में पहुंच जाती है जो चराचर में फैली हुई है। जब इस सूक्ष्म शक्ति में इसका योग हो जाता है। तो आत्मा का जो पीठ है वो यहां सिर है सारे चक्रों के पीठ सब सिर में है। सारे चक्र हमारे अन्दर हैं। तो ये जो कुण्डलिनी शक्ति आपके अन्दर जो जागृत हो गई इसके ज्यादा से ज्यादा धागे ऊपर उठने चाहें। तो सबसे पहला अनुभव जो आपको प्राप्त होता है वह है निर्विचारता। निर्विचार समाधि। समाधि को अंग्रेजी में Awareness (बोध) भी कहते हैं। समाधि अर्थात् समा- गयी बुद्धि। तो इस योग में इस नये आयाम में, इस नई धारणा में इस ब्रह्म चैतन्य में जब बुद्धि समाती है तो इसे समाधि कहते हैं लेकिन समाधि सर्वप्रथम आपको निर्विचार समाधि के रूप में प्राप्त होगी। हठात आप देखेंगे आप निर्विचार हो गए। अब जब हम विचार करते हैं तो हम या तो आगे का विचार करते हैं भविष्य का या तो पीछे का यानि भूत का। लेकिन आज अभी इस वक्त वर्तमान है। वर्तमान में हम खड़े नहीं हो सकते और जब तक हम वर्तमान में नहीं रहेंगे तब तक हमारी आध्यात्मिक उन्नति हो नहीं सकती। क्योंकि जो पीछा (गत) था वो तो खत्म हो गया और आगे का तो अभी है ही नहीं। पता नहीं क्या है। तो वर्तमान ही असलियत है। पर इसमें बुद्धि ठहर नहीं सकती। इसमें मन ठहर नहीं सकता। तो ये विचार लहरों जैसे उठते हैं। फिर गिरते हैं। पूरे समय हम इसी आंदोलन में कूदते रहते हैं कभी इसके शिखर पे, इसके

कास्य पे दोड़ते रहते हैं। आज ये विचार आया। कल ये विचार आया तो परसों ये विचार आया। लेकिन जब कुण्डलिनी आपकी चढ़ती है तो क्या होता है कि विचार कुछ लम्बा हो जाता है। इन दोनों विचारों के बीच में जो स्थान है उसे विलम्ब कहते हैं। इस विलम्ब स्थिति में आप आ जाते हैं और विलम्ब की स्थिति जो बहुत संकीर्ण होती है वो बढ़ जाती है। ये ही वर्तमान है। इसलिये आप निर्विचार हो जाते हैं। लेकिन समाधि माने पूरी तरह से सतर्क है, बेसुध अवस्था में नहीं जाते। आप सुप्ता अवस्था में नहीं जाते। जरूरत से ज्यादा सतर्क हो जाते हैं। लेकिन कोई विचार आपके अंदर नहीं आता। बस सब चीज देखना मात्र बनता है। इसे साक्षी स्वरूप कहा गया है तो आप देखते मात्र हैं। उसका कोई भी असर आप पे नहीं आता। उसकी क्रिया, प्रतिक्रिया कुछ नहीं आता। आप पूरी तरह से उस चीज को देखते हैं। ये निर्विचार समाधि की पहली स्थिति है। इस स्थिति को पहले बनाना होगा। अब जैसे यहां पर एक बड़ा सुन्दर सा गलीचा बिछा हुआ है। अगर मैं विचार में हूं तो मैं ये सोचती रहूंगी कि ये कितना सुन्दर है। ये कहां मिलता है। ये कितने पैसे का है कौन सी दुकान से खरीदा। ये सब विचार सर को खाएंगे। दूसरे अगर ये मेरा है तो और भी सिरदर्द, ये खराब न हो जाए। इसका बीमा कराया नहीं। अब कैसे होगा, क्या होगा। ये मानवीय दिमाग है। लेकिन दैविक शक्ति में आदमी ये सब सोचता नहीं, देखता मात्र है और देखता क्या है कि इसका सौन्दर्य क्या है। जिस कलाकार ने इसे बनाया उसने इसमें जो कुछ भी सौन्दर्य डाला, जो उसने अपने हृदय का आनन्द इस सौन्दर्य से प्रगटित किया है, उसको दिखाया है, दर्शाया है तो सारा आनन्द निर्गुण में ही आपके अन्दर उतरने लग जायेगा और ऊपर से नीचे तक आपको ठंडा करता हुआ चला जाएगा। तो इसका जो बनाना है जिसने बनाया है, इसका जिसने सृजन किया उसका भी कार्य पूर्ण हुआ और हमारे लिये भी इतनी बड़ी बात हो गई कि बगैर सोचे- समझे हमने इसका आनन्द पूरे रूप में उठा लिया। इस प्रकार आप निर्विचार समाधि में उतर गए। ये आपको शांति प्रदान करती है। निर्विचार समाधि आपको शांति प्रदान करती है और आपकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ती जाती है। जब आपकी आध्यात्मिक शक्ति बढ़ जाती है तो आपकी सृजन शक्ति भी बढ़ जाती है। ये हमारा हुआ या नहीं हुआ इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। और बढ़ी हुई सृजन शक्ति से आप अनेक विधि

कार्य कर सकते हैं। हठात उसमें कोई मेहनत नहीं। Spontaneous सहज। जैसे एक साहब हैं, जो बड़े गणितज्ञ थे और उनको भाषा में कोई खास दखल नहीं था। भाषा कोई जानते नहीं थे। वो सहज में आए और कविताएं बनाने लग गए। हिन्दी में भी और उर्दू में भी, मराठी में भी, अंग्रेजी में भी कविता करने लगे। तो ये कोई चेष्टा नहीं है। ये आप ही के अन्दर छिपी हुई एक शक्ति है। उसने जब आपको छू लिया तो अनायास, सहज ही में आप सृजन करने लगे। ऐसे अनेक तरह के कवि हमारे यहां हो गए। अनेक तरह के कलाकार हो गए। अपने हिन्दुस्तान के बहुत बड़े-बड़े लोग, माने हुए कलाकार सहज के ही माध्यम से हुए हैं। कलाकार अमजद अली साहब हैं, अल्लाहरक्खा के लड़के हैं। देबू चौधरी साहब हैं, और न जाने कितने ही लोग हैं जिनको कि सहजयोग से फायदा हुआ। और वो कहते हैं कि आपके सामने बैठने से ही हमारा हाथ एकदम से चलने लग जाता है। समझ में नहीं आता। जो राग कभी बजाया नहीं वो भी हम जानते हैं। इस तरह से बहुत से लोगों को इसका एक अजीब तरह का फायदा हुआ जो बहुत साल गुरुओं के पास मेहनत करने से भी नहीं हुआ। उनकी जो शक्ति थी वो जागृत हो गई। सृजन शक्ति उस सृजन शक्ति के भरोसे, न जाने वो कहां से कहां पहुंच गए। तो आपके अन्दर की सृजन शक्ति बहुत बढ़ जाती है। अब कल चक्रों पे जब हम बात करेंगे तब आपको बताएंगे कि हर एक चक्र में, कौन-कौन सी शक्तियां हैं और जो आपको प्राप्त होती हैं। आप जानते हैं कि यहां पर डाक्टरों का एक सम्मेलन हुआ था जिसमें आप लोग भी काफी आए थे और कुछ लोग नहीं भी आए थे। ये बात सच है कि कुण्डलिनी के जागरण से आपकी तन्दरुस्ती बिल्कुल ठीक हो जाती है। अधिकतर लोगों की ठीक हो जाती है। अब बिल्कुल ही मरने को आप हुए तो भगवान कहता है कि इस बार मरने दो, फिर जन्म ले लेंगे कोई बात नहीं। और कुछ-कुछ लोग इतने बेकार होते हैं कि भगवान सोचते हैं कि ऐसे बेकार लोगों को क्या फायदा है ठीक करने से क्योंकि ये तो वो दीप हैं जो कभी जलेंगे ही नहीं तो उनको ठीक करने से फायदा क्या? लेकिन अधिकतर लोग हर तरह की बीमारी से ठीक हो जाते हैं। बड़े आश्चर्य की बात है। यानि कैंसर, बहुत लोगों का ठीक हुआ है। और ऐसी हालत में ठीक हुआ है कि डाक्टरों ने घोषित कर दिया कि आठ दिन में मर जायेंगे। अब वो जिंदा बैठे हैं आठ-आठ, नौ-नौ साल बाद। ये कैसे हुआ। आप कहेंगे ये सब कैसे हुआ। ये समझने की बात है कि ये कैसे हुआ। हमारा शारीरिक, मानसिक, भौतिक सारा अस्तित्व ही चक्रों पर है। वो ही हमारे मूलतः शक्ति दायक स्रोत है मान लो आपके चक्र खूब काम कर रहे हैं, आपका अनुकम्पी नाड़ी तंत्र

खूब काम कर रहा है। इस्तेमाल करते-करते इसमें संकोर्णता आ गई। चक्रों में संकोर्णता आते ही या तो इनकी शक्ति खत्म हो जाएगी या फिर ये टूट जाएंगे। टूटते ही आपका सम्बन्ध जो आपके सम्पूर्णता से है, आपके मस्तिष्क से वो टूट गया। फिर हो गये आप अलग। एकाकी हो गए। इसे कहते हैं Malignant। कैंसर आपके अन्दर हो गया। अब कुण्डलिनी क्या करती है जैसे कोई धागा हम मोती में पिरोते हैं उसी तरह से धीरे-धीरे वो हर एक चक्र में बायां, दायां दोनों में गुजरते हुए और सौधे यहां से निकल जातो है। उससे वो चक्र जो हैं वो फिर से प्लावित हो जाते हैं। पुष्ट हो जाते हैं। प्लावित होने पर उनके अंदर शक्ति आ जाती है। एक साथ जुड़ जाने के साथ उनका संबंध मस्तिष्क से भी हो जाता है और परम चैतन्य से भी हो जाता है। एक बार ये संबंध पूरी तरह से हो जाए उसके बाद कोई बीमारी नहीं पड़ सकता। अगर कोई सहजयोगी है, तो उसको कोई बीमारी नहीं। ऐसे बहुत से हैं। सब बीमारी नहीं आते हैं सहजयोग में। ऐसे भी लोग हैं जो बिल्कुल स्वस्थ हैं। ये तो बढ़िया लोग होते हैं। क्योंकि जैसे ही वो पार हो जाते हैं जैसे ही उनको कुण्डलिनी का आशीर्वाद मिल जाता है ऐसे ही उनकी प्रगति ज्यादा जोरों से होती है और उसके बाद उनको कोई भी बीमारी नहीं होती। हमारे यहां बहुत से ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि पहले हमें जुकाम भी होता था तो डाक्टर के पास जाते थे और अब किसी को अगर कैंसर हो जाए वो हमारे पास आते हैं। सो आप ही डाक्टर बन जाते हैं। आप डाक्टर बन जाते हैं खुद आप अपनी बीमारी समझते हैं। क्योंकि जब कुण्डलिनी सहस्रार को भेदती है तो अपने आप महसूस होती है ठंडी-ठंडी हवा। और ये सात चक्र हैं इन चक्रों पर आप जानते हैं कि आपका कौन सा चक्र खराब है और दूसरों का कौन सा चक्र खराब है। अगर आप समझ लें कि किस तरह से इस चक्र को ठीक करना है आप अपने भी चक्र ठीक करिये और दूसरों के भी ठीक करिये। इससे पहले तो आपको अपने चक्र ही महसूस ही नहीं होते थे। अब आपको अपने चक्र महसूस होंगे और इसी को हम कहते हैं अपना ज्ञान। स्वयं का ज्ञान। जब अपने चक्रों के बारे में आपने सब कुछ जान लिया तब फिर आप अपनी तन्दरुस्ती अच्छी रख सकते हैं। दूसरे किसी के चक्रों को गर आपने जान लिया तो आप दूसरों की भी तन्दरुस्ती अच्छी रख सकते हैं। और अब आप बात चक्रों की करते हैं। आपकी भाषा चक्रों की होती है। आप यह नहीं कहते कि ये मुसलमान है, ये हिन्दू है, ये ईसाई है। यह नहीं कहते। आप यह नहीं कहते कि ये अंग्रेज है कि ये हिन्दुस्तानी हैं या कोई और। आप यह नहीं कहते कि इसके बाल सफेद हैं कि काले हैं। कि इसने सूट पहना है कि कुर्ता-पाजामा पहना है यह नहीं कहते। ये सब बाह्य

के आडंबर हैं। आप सिर्फ यह कहते हैं कि मां इसके ये चक्र गड़बड़ हैं। आप सिर्फ चक्रों की बात करते हैं। कौन सा चक्र खराब है उसकी आप बात करते हैं। उसी तरफ आप का चित्त जाता है। उस चक्र को कैसे ठीक करना है वो आप सीख लीजिये। हो गया काम खत्म।

अब परमात्मा को पैसा—वैसा समझ में नहीं आता। ये बैंक और पैसा। सिरदर्द। ये मनुष्य ने बनाया है। इसका सम्बन्ध भगवान से है ही नहीं। कैसे हो सकता है। बताइये। अजीब सी ये संस्थाएं हैं। कुछ समझ में नहीं आती मेरे भी। तो इसके लिये आप पैसा—वैसा नहीं दे सकते। यह तो जीवन्त क्रिया है। आप अपने पेट को कितना पैसा देते हैं कि वो पचन करते हैं आपके खाने को! या इस हाथ को कितना आप रुपया देते हैं जो आपका सारा काम करते हैं! इसी प्रकार इसके लिये पैसा मांगने वाले को समझ लीजिए इससे बढ़कर पाखंडी कोई नहीं। एक तो भगवान का काम करते हैं और ऊपर से पैसा लेते हैं। ये भगवान का काम नहीं कर सकते क्योंकि भगवान को तो पैसा समझ में नहीं आता। अपने दिमाग से यह बात निकाल दीजिए कि आप भगवान के नाम पर पैसा दे सकते हैं। हां ठीक है यह मंडप बनाया इसका पैसा दो। ठीक है आप हवाई जहाज से आये हैं इसका पैसा दो। ये सब भौतिक चीजों का पैसा दे सकते हैं। लेकिन परमात्मा के कार्य का आप पैसा नहीं दे सकते। तो ये जो आपके अंदर आंतरिकता से एक चीज आ जाती है इसे कहते हैं सामूहिक चेतना। माने दूसरों के प्रति चेतित होते हैं। आपको महसूस होता है इनका ये चक्र पकड़ा है। अब एकदम अंदर से ऐसी अनुकंपा आयेगी कि चल भई इसको ठीक कर। दो चार सहयोगियों को फोन करके, सब लग जायेंगे उसके पीछे। अरे भई कुछ तुमने अपना रक्षण किया है। कुछ अपनी ओर नजर की या लग गये। इतनी अनुकंपा बहती है लोगों की कि कुछ पूछे मत। मुझे फोन पर फोन करेंगे कि मां फलांना बड़ा बीमार है। अरे भई वो सहजयोगी है क्या। नहीं—नहीं मां वो है तो नहीं पर अच्छा आदमी है, शरीफ है बेचारा, अच्छा आदमी है, आप जरा चित्त दीजिये। उसको ठीक करना है। ऐसी अनुकंपा बहती है। अनुकंपा में लड़ाई—झगड़े का क्या सवाल उठता है। अभी मैं मजार पर गई थी निजामुद्दीन साहब के। वो भी बहुत बड़े औलिया थे। हम मानते भी बहुत हैं उनको। हम सबको मानते हैं। हम गुरु नानक साहब की भी पूजा करते हैं। मोहम्मद साहब की भी हम पूजा करते हैं। दोनों एक ही चीज हैं। आप समझें या न समझें। बेकार में लड़ाई—झगड़ा कर रहे हों असल में सब एक ही हैं। बहरहाल वहां भी मुझे आश्चर्य हुआ। वहां भी राजकारण चल रहा है। अरे भई जिसके दरवाजे बैठे हो वहां राजकारण क्या कर रहे हो।

सहजयोग में राजकारण नहीं चलता। ऐसे शुद्ध बनो। जब तक मन शुद्ध नहीं हुआ तब तक क्या फायदा है। धर्म कर्म करने से कोई फायदा नहीं। एक दम शुद्ध मन हो गया। शुद्ध मन से सिवाय अनुकंपा के कुछ और नहीं बहता। सबके लिये दिल बहने लगता है। दिल इतना बड़ा हो जाता है किसके लिये क्या करें? उसके लिये क्या करें? अब यह सोचें कि यहां इतने अंग्रेज बैठे हैं। एक जमाने में इनके बाप—दादा, ये तो नहीं, यहां पर राज करते थे। काफी दुष्टता की उन्होंने। आज जब ये अंग्रेज आते हैं आपके बंबई में या दिल्ली के एयरपोर्ट पर तो आपकी जमीन को चूमते हैं, नमस्कार करते हैं। कहते हैं कि योग—भूमि है। ये इन्होंने जाना क्योंकि इनके पास वो सूक्ष्म ज्ञान है। अब पूछिये कि ये निजामुद्दीन साहब वास्तव में औलिया थे कि नहीं? एक सवाल पूछियेगा। फौरन हाथ में लहरियां शुरू हो जायेंगी। नानक साहब आदि गुरु थे या नहीं? पूछिये देखिये ऐसे हाथ करके पूछिये कोई सा भी सवाल। परमात्मा है कि नहीं, पूछिये। जो सच्ची बात होगी वो आपको लहरियां देगी, अगर झूठ बात होगी तो गर्मी देगी, कुछ—कुछ में तो थोड़े फफोले भी हो जायेंगे। आपमें सामूहिक चेतना जागृत हो जाती है। उसके कारण आपके अंदर जो अनुकंपा है वो बहने लग जाती है। तीसरी चीज जो होती है उसमें आपको केवल सत्य पता होता है। पूर्ण सत्य। ये क्या होता है। जैसे मैंने कहा कि पता करिये। जेल से छूटने के बाद कोई अपराधी गेरुए कपड़े पहन कर यदि आपके सामने खड़े हो गये तो हो गये साधू बाबा। कुछ जादू मंत्र किया कुछ ये वो किया। लोग हो गये पागल उनके पीछे। हाथ ऐसे करके पूछिये फलाने ये गुरु हमारे हैं ये सच्चे हैं कि झूठे। फौरन आपको पता हो जायेगा। अगर 10 साक्षात्कारी बच्चों को आंखों पर पट्टी बांध कर उनसे पूछिये कि बेटे इस आदमी को क्या तकलीफ है सब एक ही ऊंगली दिखायेंगे। सब चीज आपको हाथ पर ही पता चलेगी। रोग निदान करने की जरूरत नहीं। एक साहब बोस्टन गये थे। कहने लगे निदान करते—करते मैं मर गया। पैसे के पैसे लग गये। इन्होंने तो मेरी अंतर्द्वियां निकाल करके निदान किया। यहां बाहर ही से आप निदान कर लेंगे कि किसकी क्या तकलीफ है। क्या शिकायत है। और घबड़ाने की कोई बात नहीं क्योंकि ये ठीक सब ठीक हो सकता है। शारीरिक ही नहीं, मानसिक, बौद्धिक और सबसे बड़ी बात है आध्यात्मिक। गलत—गलत गुरुओं के यहां गये। हमारे तलवार साहब से पूछिये वो बतायेंगे किस्से गुरुओं के। कैसे चक्रों में डालते हैं। और इन्सान बहकता हो रहता है। अब तो हमने उनको मान लिया। अरे भई क्यों माना? उन्होंने तुमको क्या दिया? हम तो माँ हैं हम तो पूछेंगे कि बेटे तुमको तुम्हारे गुरु ने दिया क्या? क्यों माना तुमने उनको? कुछ तुमको दिया है। और

तुमने जाना कैसे कि वो असली हैं या नकली। रुपया पे रुपया चढ़ा रहे हैं। कितना बताया कितना समझाया बहुत नाराज होते थे लोग मेरे से। ठिकाने पर आये। तो उस वक्त आपको केवल सत्य पता होता है। आप आदमी को देखकर बता सकते हैं कि कौन से गुरु से चला आ रहा है। क्योंकि हरेक गुरु ने कोई न कोई एक चक्र पर काम किया होता है। आप फौरन बता सकते हैं कि ये कौन से गुरु से चला आ रहा है। और ऐसे ये गुरु भागते हैं और इनके शिष्य भी क्योंकि सत्य को झेलना बहुत कठिन बात है इन लोगों के लिए। अब इसमें आप अपने ही गुरु हो जाते हैं। जो बड़े-बड़े महान गुरुओं ने कार्य किया है वो सबसे बड़ा यह है कि हमारे अन्दर ऐसी शक्ति बसा दी है कि हम अपने गुरु हो सकते हैं। आप खुद ही अपने को बताते हैं कि भाई देख ये रास्ता ठीक नहीं इधर मत चल, इधर चल। वो सत्य विवेक बुद्धि जो कहती है वो सत्य विवेक बुद्धि हो जाती है। असत्य रह ही नहीं जाता। अपने आप ही आप छोड़ देते हैं। मैं किसी से कुछ नहीं कहती। ये नहीं कहती कि शराब मत पियो। कुछ नहीं कहती क्योंकि दिल्ली में अगर ऐसा कहो तो आधे लोग उठ कर चले जायेंगे। सब जाति के लोग शराब पीते हैं। हालांकि मना है सब पीते हैं। लेकिन सहजयोग में आने के बाद मैं कहती हूँ कि जाओ शराब की दुकान पर। कोई शराबी दिखाई दिया तो दूसरा रास्ता काट लेंगे। और शराब की दुकान देखो तो अपना घर हटाकर दूसरी जगह चले जायेंगे। क्योंकि अंदर प्रकाश आ गया ना। बाहर कुछ नहीं। सब ड्रग्स छूट गये, शराबें छूट गई वो सारा जो क्लब जीवन था ये वो था जिससे कि मनुष्य का सर्वनाश होता है सब छूट गया। ये सारे कार्य सर्वनाश की ओर ले जाते हैं। लेकिन न जाने मनुष्य ऐसा क्यों करता है। लंदन में हम रहते थे कि देखा एक इंसान बड़े जोरों से चला जा रहा है मोटर लिये। पता नहीं इसको काहे की जल्दी हो रही है? रुककर देखा कि कहां जा रहा है तो एक पब के सामने खड़े हैं। दो चार अंदर से आकर नीचे गिरे हुए थे रास्ते पर बेहोश और ये उसी के लिये दौड़े चले आ रहे हैं कि मैं क्यों नहीं बेहोश हुआ। अक्ल मारी जाती है ना, जिसको मत (बुद्धि) मारना कहते हैं बिल्कुल अक्ल मारी जाती है। और चाहे वो सिख हो चाहे वो मुसलमान हो, चाहे वो ईसाई हो बड़ी शान से अपनी बार दिखाते हैं, बार, घर के अंदर और वहीं सबके फोटो लगे हुए हैं। ये धर्म नहीं है।

अंदर बाहर एक ही जानो ये अपने आप ही हो जाता है। मुझे कहने की जरूरत ही नहीं है। आप अपने ही गुरु हो जाते हैं। आप अपने ही आप ठीक हो जाते हैं मुझे कहने की कोई जरूरत ही नहीं। आज मैंने कह दिया इसका मतलब नहीं कि आप छोड़छाड़ के भागिए। यह सब गंदी आदतें छूट जायेंगी। अब मैं इश्टिहार

देखती हूँ शराब के खिलाफ इतना लिखा हुआ। इससे कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। लोग शराब पीते-पीते भी वही इश्टिहार बोलते रहते हैं। फिर हमारे यहां जो आजकल आधुनिक तरह की संस्कृति आ रही है इससे बहुत बचकर रहना चाहिए। इन लोगों को तो वहां बेचारों की खोपड़ी खराब कर दी है। सत्यानाश कर दिया। इनके घर-द्वार छूट गये। एक-एक औरत आठ बार शादी करती है तो एक-एक आदमी नौ बार शादी करता है। ना घर ना द्वार, ना बाल ना बच्चे। सब अनाथाश्रम में रहते हैं। दूसरे जो कुछ बच भी गये हैं वो एड्स से मर रहे हैं। उससे बच गये तो वहां और पचासों बीमारियां आ गईं। अब एक नई बीमारी आई है। जो लोग बहुत काम करते हैं इनका जो चेतन मस्तिष्क है वही नहीं काम करता और वो हकबल हैं जैसे कि कोई बड़ी भारी मछली या सांप हो इस तरह से उनको कंधे पर लादकर घुमाते हैं। दिमाग चलता है। बाकी कुछ नहीं हाथ नहीं चल सकते, पैर नहीं चल सकते, शरीर नहीं चला सकते। ये भी मैंने बताया था कि होने वाला है। एड्स भी बताया था। पर सब बड़े गुस्से हो गये थे। अब जब हो गया है तो बैठे हुए हैं। और गंदी-गंदी जगह दिमाग जाना और गंदी-गंदी बात सोचना। अपने बच्चों को भलाई नहीं सोचते कि बच्चों का क्या होगा। अब सिनेमा में भी यही है। उसमें भी यह कुछ अच्छी बातें सिखाते नहीं। कम से कम हिन्दुस्तानी फिल्मों में यह नहीं दिखाते कि कोई बुरा आदमी हीरो हो गया है। वहां तो बुरा आदमी ही हीरो होता है। पर तो भी अपनी फिल्मों में भी ये कितनी गंदी-गंदी बातें सिखाते हैं बच्चों को। मार-पीट ये वो। अरे जब बच्चों को मार-पीट सिखाओगे तो शांति कहां से रहेगी देश में। इस प्रकार एक तरह से हमारे ऊपर आक्रमण आ रहा है। एक नये तरह का इन विदेशियों का। इधर आप जरूर ध्यान दीजिये। अपने बच्चे भी वैसे कपड़े पहनने लग गये। उसी तरह से जवाब देने लग गये। इसी तरह से उनका रहन-सहन भी हो रहा है और डिस्को-विस्को में जाने लग गये चोरी-छिपे। और वहां बदमाशी कर रहे हैं। इस तरफ सतर्क होना पड़ेगा। जो बच्चे एक बार सहजयोग में आ गये उधर मुड़कर भी नहीं देखते। उनको अच्छा ही नहीं लगता। उसका शौक ही नहीं चढ़ता। आपके सामने ऐसे बहुत से बच्चे आयेंगे आप देखियेगा। सहजयोग में आप खुश हो जायेंगे। इन सब चीजों से अपने को बचाना है। अब बचाने के लिये एक ही मार्ग है कि हमों अपने गुरु हो जायें। उस गुरुत्व से आप समझ जायेंगे कि आपके लिये भलाई क्या है, अच्छाई क्या। आपकी फैमिली के लिये क्या अच्छा है। आपके घर वालों के लिये क्या अच्छा है। आपके रिश्तेदारों के लिये क्या अच्छा है। इस देश के लिये क्या अच्छा है। उसी ओर आप बढ़ें। इस प्रकार सहजयोग में आने से

आपमें वो सूक्ष्मता आ जायेगी। और वह सूक्ष्म शक्ति जो कि सारे ही जीवन्त कार्य करती है। हम सोचते भी नहीं कि दिल क्यों धड़कता है। अनहद कह दिया अनहद है। पर कौन अनहद है। कौन अनहद है ये दिल को चलाने वाला ? कौन है जिसने इन्सान को बना दिया ? और किसलिये बनाया है ? यह सारा कुछ मतलब आपको सहजयोग में मिल जाता है। और अब आप जानते हैं कि आपके जीवन का अर्थ क्या है। क्यों आप इस संसार में आये। क्यों आपने मनुष्य रूप धारण किया। इस वक्त आप समझते हैं कि आप कितने गौरवशाली हैं और कितने विशेष हैं। अब समझ लीजिये कि अगर कोई आप देहात में टेलीविजन ले जाइये और कहिये कि इसमें हर तरह का ड्रामा, हर तरह की चीज आयेंगी। वो कहेंगे कि क्या बकवास कर रहे हो ये तो डिब्बा पड़ा हुआ है। डब्बा। ऐसे हम भी अपने को एक डब्बा समझते हैं। ये बात नहीं। बहुत बढ़िया तरीके से बनाया गया है ये डब्बा। इसमें सूक्ष्म तार ऐसे गिने हुए हैं और वे सूक्ष्म तार जैसे के तैसे रखे हुए हैं। उन्हें कोई छू नहीं सका अभी तक। वही सूक्ष्म तार छेड़ने की बात है। पर जैसे ही आप इस टेलीविजन का कनेक्शन लगा दीजिये वो हैरान कि अरे वाह ये क्या चीज है। ऐसे ही आप लोग भी हैं और आप अपने को जानिये और जानने के बाद आप समझ जायेंगे कि आप क्या हैं। बगैर अपने को जाने हुए चाहे आप सोचें कि आप लाट साहब हैं तो वां भी गलत है। और चाहे आप सोचें कि आप कुछ नहीं तो वो भी गलत है। पहले अपने को जान लीजिए। और जब जाना जाता है तो दिया भी जाता है। जब तक दीपक में प्रकाश नहीं होता, उसको जलाया जाता है और जब वो जल जाता है तो वो सबको प्रकाश देता है क्योंकि ये उसका कार्य है। इसी प्रकार एक दीप से अनेक दीप जलाने की जो बात है, उसका साक्षात सहजयोग है। इसमें से बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्होंने पहले मुझे देखा भी नहीं और जागृत हो गये। कैसे ? एक सहजयोगी गये उन्होंने किया। और प्रदेश में यह काम बड़े जोरों से हो रहा है। रूस में लोग आप आश्चर्य करेंगे कि साइबेरिया

के मरुस्थल में जाकर वहां काम किया। साइबेरिया में भी सहजयोग चलाया। बड़े आश्चर्य की बात है कि ये लोग कैसे साइबेरिया गये। पिछली मर्तवा जब मैं रूस गई तो एयरपोर्ट पर हजारों लोग थे। तो जब सामने आये तो मैंने कहा कि ये कहाँ से आये। साइबेरिया से। कहने लगे कि माँ 50 आदमी आये हैं साइबेरिया से। साइबेरिया में लोगों को सजा देने के लिये भेजते थे। जैसे अन्डेमान-निकोबार। हाँ अन्डेमान-निकोबार में भी सहजयोग चल पड़ा है। आपको आश्चर्य होगा कि जहां यह बीज चला जाता है उस आदमी को चैन ही नहीं पड़ता सहजयोग दिए बिना। अकेले कैसे रहें। माँ हम तो अकेले हो गये यहां कैसे सहजयोग करें। सहजयोगी बनाओ सहजयोगी। और हिम्मत की बात है। इस पर बस अहंकार नहीं आना चाहिए। हिम्मत होनी चाहिए। हर आदमी हजारों आदमियों को पार कर सकता है। अब हमारी उम्र हो गई आप जानते हैं लेकिन कोई हर्ज नहीं। आप लोग तो हैं। आप लोग तो हमारा कार्य करेंगे ही। और हमें पूर्ण आशा है कि सहजयोग दुनिया को रंगत ही बदल देगा। आज न जाने क्यों मुझे दुनिया ही अलग नजर आ रही है। कुछ फर्क ही नजर आ रहा है। न जाने क्यों ? क्या हो गया है सब कुछ अलग ही अलग दिखाई दे रहा है। और बड़ी शांति सो लग रही है अंदर में। हो सकता है कि वाकई में सतयुग का ऊषा काल आ गया है उसकी प्रभात आ गई है। सारे ही धर्म, उसके संस्थापक एक ही पेड़ पर पैदा हुए फूल थे मैंने कहा। लेकिन हमने ये फूल तोड़ लिये हैं और लड़ रहे हैं कि ये हमारा है हमारा है। सहज के सागर में सारे ही समा जाते हैं और सबको की हम पूजते हैं। समोभाव नहीं है समश्रद्धा भी नहीं कहना चाहिए पर पूजा सबकी होती है। ये हुए बगैर हम लोग वो नहीं जान सकते कि हम सब एक हैं। कोई फर्क नहीं, हमारे में। आशा है कि जो नये लोग आये हैं सहजयोग की प्रणालियां सोख लेंगे। कल भी मैं चक्रों पर बात करूंगी। एक-एक विषय पर बातचीत होगी। परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।